Members to create that atmosphere in the country that so far as this particular section is concerned, the law is going to be enforced irrespective of the persons concerned. With that I would request the hon. Members not to press for the appointment of this Committee, as it will not serve any useful purpose at the present stage.

Shri Sonavane (Sholapur—Reserved—Sch Castes) Why has the Deputy Minister brought in God for his help in this matter?

Mr. Chairman: I find Shri V P. Nayar is not here in the House.

Shri T. B. Vittal Rao: What about the amendments?

Mr. Chairman: There are two amendments—one by Shri Guha and another by Shri Prabhat Kar. I find Shri Guha is not present

Now the question is:

"That for the original Resolution, the following be substituted, namely.—

"In view of the present foreign exchange difficulties and in view of a large number of cases of violation of Foreign Exchange Regulation Act, this House is of opinion that steps be taken to amend the law so as to ensure—

(a) speedy disposal of all the cases of violation of the said Act, in open court; and

(b) deterrent punishment for such offences;".

The motion was negatived

Mr. Chairman: The question is:

"That for the original Resolution, the following be substituted, namely—

"In view of undisclosed foreign exchange held by various industrialists and others through malpractices and in view of a large number of cases of violation of Foreign Exchange Regulation Act, this House is of opinion that a Committee consisting of Members of Parliament be appointed to enquire into and report on the measures to be taken, if necessary, by amending the existing Act with a view to eradicate malpractices in foreign exchange."

The motion was negatived

Mr. Chairman: The question is:

"This House is of opinion that in view of undisclosed foreign exchange held by various industrialists and others, a Committee consisting of Members of Parliament be appointed to enquire into and report on the measures which ought to be taken with a view to effectively eradicate malpractices in foreign exchange"

The motion was negatived

17.13 hrs

RESOLUTION *RE*: EXPORT OF MONKEYS

Shri Mohan Swarup (Pilibhit): I beg to move:

"This House is of opinion that the export of monkeys be banned."

यह रेजोल्यूशन एक मर्तबा पहले भी बैलट पर आ चुका है, लेकिन उस समय मौका नही मिल सका और इस रेजोल्यूशन पर विचार नही हो सका । यह खुशी की बात है कि आज यह रेजोल्यूशन बैलट पर आ गया है और मुझे बोलने का अवसर मिला है । जहा तक बन्दरो के बाहर भेजे जाने का ताल्लुक है, एक बहुत बड़ी तादाद मे बन्दर बाहर भेजे जाते है । मेरे पास इसकी फ़िगर्ज मौजूद हैं । १९५३ मे २० हजार बन्दर बाहर भेजे गये, १९५४ में ६९ हजार, १९५५ में ५३ हजार, १९५६ मे १,२०,००० बन्दर बाहर भेजे गये ।

Shri Khadilkar (Ahmednagar): A good foreign exchange earner.

श्री मोहन स्वरूप : अब हर साल दो लाख से ऊपर बन्दर बाहर भेजे जाते हैं। मेरे पास इस बारे में १९५४–५५ की फ़िगर्ज मौजूद है। उस साल १००,३३० बन्दर बाहर भेजे गये और उन से गवर्नमेंट को १८,१५,२२१ रुपया फारेन एक्सचेंज की शक्ल में मिला। १९५५–५६ में १,२६,२९६ बन्दर बाहर भेजे गये और २८,५७,५५७ रुपये फ़ारेन एक्सचेंज की शक्ल में गवर्नमेंट को मिले। मेरे पास जो फ़िगर्ज हैं, उन से जाहिर होता है कि अब हर साल दो लाख से ऊपर बन्दर बाहर भेजे जा रहे हैं।

बाहर बन्दर भेजने के बारे मे इस पार्लियामेंट में कई मर्तबा सवालात भी हो चुके हैं। इसके मुताल्लिक यह कहा गया कि यह एक ट्रीवियल मामला है, छोटा सा मामला है और इस लिये इस पर बहस करने से क्या फ़ायदा है। मेरे बहुत से साथियों ने भी यह कहा कि यह बहुत छोटा सा मामला है। बन्दर बाहर भेजे जाने की मुआफकत मे कई बाते कही गई। कहा गया कि बन्दर फसलो को नुकसान पहुचाते है, वे एक न्युसेन्स है, लोगो को परेशान करते है, उन के बाहर भेजने से साइंटिफिक रिसर्च में मदद मिलती है और मेडिकल साइंस को मदद मिलती है। मुझे याद है कि एक बार पूज्य पडित नेहरू ने इस बारे में कहा कि यह मामूली सा मामला है, इस से इंडिया को फारेन एक्सचेज मिलती है, इस मामले को बार-बार प्रैस करने से क्या फ़ायदा है? लेकिन मै अर्ज करना चाहता हूं कि इंडिया का ट्रैडीशन हमेशा से "अहिंसा परमो धर्मः" और जानवरों की हिफाजत करना रहा है। श्री अरविन्द ने कहा है —

> India has always existed for humanity and not for herself, and it is for humanity and not for herself that she must be great."

जब हम पुराने इतिहास को देखते हैं, तो पाते हैं कि हमारे पुराने ऋषियों ने वैदिक एज में अहिंसा परमो धर्मः और जानवरों की रक्षा पर ज़ोर दिया था। महात्मा बुद्ध एक बहुत बड़े विशाल साम्राज्य के राजकुमार थे। एक रोज उन के दिल में इस तरह की घटना देख कर ख्याल पैदा हुआ और वह उस साम्राज्य को छोड़ कर चले गये और फिर उन को निर्वाण मिला और उन्होंने सत्य, अहिंसा की तबलीग की। उन्होंने सिर्फ़ देश में ही नही बर्मा, मलाया, जापान, चीन, लंका वगैरह में इस बात की तबलीग की। महाराजा अशोक के साम्राज्य का वक्त हिन्दुस्तान का एक ज़रीं जमाना था। ब्रिटिश *गवर्नमेंट से पहले पूरा हिन्दुस्तान उन के* साम्राज्य में था। जंग करने के बाद, खूरेजी करने के बाद उन के दिल में यह ख्याल पैदा हुआ कि जीव की रक्षा होनी चाहिये और खूंरेजी से परहेज करना चाहिये। उन्होंने जानवरों का बध करना बैन कर दिया।

हाल ही मे हम ने एक नया एक्सपेरीमेंट देखा। मुल्क मे अंग्रेजों की हुकूमत थी और लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी ने यह फिलासफी, हमारे सामने पेश की कि बुलेट का मुकाबला हम निहत्थे और अहिंसा के जोर से कर सकते है और अपने मुल्क को परदेशियों से खाली करा सकते है। हम ने देखा कि १९४७ में हम ने सिर्फ अहिंसा के ज़ोर मे और निहत्थे रह कर भी ब्रिटिश गवर्नमेंट को अपने देश से निकाल दिया, जिस का साम्राज्य इतना बड़ा था कि सूरज उस पर नही डूबता था और अपने देश को आजाद करा लिया। हिन्दुस्तान का इतिहास इस किस्म की चीजों से भरा हुआ है और उस की बड़ी ट्रैडीशन्ज है। जहां तक बन्दरों का ताल्लुक है, मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूं कि आज भी इस देश में हजारों नहीं करोड़ों इन्सान ऐसे हैं, जो मंगल के

जिन बन्दरों को दाना देते हैं और उन की पूजा होती है। मैं देखता हूं कि बहुत से मन्दिरो में बन्दरों की प्रतिमायें लगी है और उन की पूजा होती है।

श्री वाजपेयी (बलरामपुर) : कौन से मन्दिर में ?

श्री मोहन स्वरूप : बहुत से मन्दिर हैं।

एक माननीय सदस्य : हनुमान के मन्दिर हैं।

चौ० रणवीर सिंह (रोहतक) वाजपेयी जी को पता नही है बन्दरों की मूर्तिया मन्दिरो म लगी हुई है।

श्री मोहन स्वरूप लखनऊ मे मैंने एक अजीब वाकया देखा। मैंने देखा कि एक छोटे से विमान के पीछे कम से कम डेढ हजार आदमी जा रहे है। मैंने पूछा कि यह क्या तमाशा है क्या मामला है तो मझ बताया गया कि यह बन्दर का विमान निकल रहा है। बन्दर की लाश को बड़ सुसज्जित ढग से रखा गया था और हजारो इन्सान उस के पीछे चल रहे थे। सभापति महोदय, आज इस देश मे इस किस्म के इन्सानो की तादाद हजारो लाखो की है, जोकि बन्दर को पवित्र मानते है और उसकी पूजा करते है और चाहते है कि उस की रक्षा हो। मैं यह नही समझता कि इस बात को थोडे से पैसो के पीछे नजर-अन्दाज क्यो किया जा रहा है। कुल सताईस, अठाईस लाख रुपयो की बात है, जिन के पीछे उन की हत्या की जा रही है। २३ जनवरी, १९५४ को इंडियन नैशनल काग्रेस में अपने सभापति के भाषण में पडित नेहरू ने कहा था :

> "हम अपने गुरु महात्मा गाधी के वाक्य कभी नही भूल सकते कि स्वार्थ के लिये छोटे रास्ते कभी नही अपनाये जा सकते। शायद आज के ससार में बहुत सी आपत्तिया इसी कारण दीखती है कि लोग इस प्रारभिक नियम को भुला बैठे हैं तथा अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये जो भी कुछ वह कर रहे है, उसे अपना अधिकार व न्याय कहने से तनिक भी नही डरते।"

उपाध्यक्ष महोदय, उसी के बाद हमने बन्दरो की तजारत शुरू कर दी और आज बीस देशो को हम इन बन्दरो का एक्सपोर्ट करते है। मैंने सब से पहले कहा था कि इससे साइंटिफिक रिसर्च के काम में मदद मिलती है। लेकिन जो इससे बन्दरो की हत्या होती है, उस ओर भी हमारा ध्यान जाना चाहिये। इस हत्या को देख कर हमारे सिर शर्म से झुक जाते हैं।

हमारे देश मे कई एक्सपोर्टस है। मिस्टर बी० के० राय और मिसेज बी० के० राय एट बला रोड, दिल्ली वाले एक्सपोर्ट करते है। अमरीका की फर्म ए० लिल्ली एड को० और पार्क डैविस एड को० इन बन्दरो को इम्पोर्ट करते हैं। पद्रह रुपये फी बन्दर पकडने वाले को दिया जाता है और सौ रुपया फी बन्दर का मिल जाता है। हर सप्ताह बी० ओ० ए० सी० के दो चार्टर्ड प्लेन इन बन्दरो को ले जाते हैं। छोटे-छोटे बन्दरो को प्रैफर किया जाता है और पसन्द किया जाता है। दूध पीते छोटे-छोटे बन्दरो को उनकी मा से छीन कर बाहर के मुल्को मे भेज दिया जाता है। आपने इन बन्दरो को स्टेशनो पर चिल्लाते हुये कई बार देखा होगा। ठूस-ठूस कर इनको भरा जाता है और इनके हिलने जुलने के लिये कही भी कोई खाली जगह नही रखी

[श्री मोहन स्वरूप]

जाती है । बहुत से बन्दर सफोकेशन की वजह से मर जाते है ।

Shri Khadilkar: What is the ruling export price for one monkey?

श्री मोहन स्वरूप : सौ रुपय मिलते है ।

मै कहना चाहता हू कि आधे बन्दर तो सफोकेशन की वजह से ही रास्ते में मर जाते है । मै आपको एक मिसाल देना चाहता हू । बी० ओ० ए० सी० के एक हवाई जहाज में १६०० बन्दरो को ले जाया जा रहा था । लन्दन एयरपोर्ट पर उनको एक ऐसे वैन मे ले जाया जा रहा था जसमें कोई वैं टलेटर्स नही थे । कुछ ही समय के बाद देखा गया कि ४५७ बन्दरो मे से ३९४ बन्दर मर गये । इससे बहुत सी फारेन कट्रीज को धक्का पहुचा । इससे स्वीडन, फ्रास, जर्मनी, इग्लैंड इत्यादि देशो के लोगो को बहुत धक्का पहुचा । इस के सम्बन्ध मे प्राइम मिनिस्टर साहब को भी एक लैटर लिखा गया और अगर इजाजत दें तो मै इसको पढ कर सुनाना चाहता हू ।

चौ० रणबीर सिंह (रोहतक) : आपको कैसे मिला ?

श्री मोहन स्वरूप : बाहर के किसी साहब ने इसे मुझे भेजा है । चूकि यह लेटर बहुत ही इटिरेस्टिंग है और मेरा बहुत कुछ मतलब इससे हल हो जाता है, इसलिये मै आपकी आज्ञा से पढ़ना चाहता हू ।

The Minister of Commerce (Shri Kanungo): Considering the past precedents of this House, if a document is placed on the Table, its genuineness has got to be guaranteed by the Member concerned.

Shri Braj Raj Singh: That is printed

Shri Mohan Swarup: That is printed matter.

Shri Kanungo: I have only mentioned that the hon. Member's assurance is good enough as far as the House is concerned. That is the previous ruling of the Chair In any case, I would submit that the genuineness of the letter should be guaranteed by some authority for your satisfaction.

Mr. Chairman: All right: if it is so desired, it may be placed on the Table after reading Then we will see

Shri Mohan Swarup: That is an open letter to Nehru:

It reads as follows:

"When a few years ago the world was stunned by the death of one of the greatest men of all time, Mahatma Gandhi, our grief in Great Britain was hardly less profound than in India When for a brief spell he left India and came to London, I was privileged to meet him and attended meetings addressed by him These were unforgettable moments It was almost as if one was in the presence of the world's greatest teacher, 2,000 years ago It was as if St Francis of Assisi, whom the world specially remembers on "World Day for Animals", instituted by that equally great humanitarian, Miss Margaret Ford, had come to life. Our hearts ached for you, Sir, knowing your intense admiration for your friend Mr Gandhi a Saint whom we could ill afford to lose.

Our grief and India's sorrow were somewhat tempered when you, Mr. Nehru, became India's Prime Minister Our faith in you has not been misplaced, seeing the colossal good you have done for your country and for man in general. We looked upon you as the person upon whom Mr. Gandhi's cloak of goodwill, charity and saintliness had fallen.

A wave of indignation ran through Great Britain when in

January, nearly 400 little friendly Indian monkeys perished at London Airport. The whole world was shocked to learn that these little Indian monkeys were destined for the U.S.A. where the most revoltingly cruel and totally unnecessary experiments awaited them. They would have been shot up into the air, strapped in harnesses. Some of these little Indian monkeys have been seven times higher than man, who, needless to say, is far too cowardly to allow himself to be shot up 80 and 100 miles. Many would have been used for "Polio" research by heartless and conscienceless monsters in human form, who forget (deliberately, of course!) that Polio is a disease brought about by man because of his wrong food and because of all the vaccinations and immunisations, none of which have the slightest *"raison de' etre"*.

Everyone in England said: 'How shocking! We must bring this terrible fate awaiting Indian monkeys to the notice of Prime Minister Nehru, who will no doubt take steps to have this outrage against civilisation and humanity, stopped forthwith!'.

It was then reported in all British newspapers that you indeed had stopped this scandal and every animal-lover throughout the world blessed you and thanked you in his heart.

Now the news has reached us—a news we find difficult to believe—that you have reversed your decision and given permission for these little Indian monkeys to be exported again to be killed in the U.S.A. by the most inhuman and revolting, diabolical and satanic ways, human monsters have been able to devise, to satisfy their sadistic curiosity. Another cry of dismay and despair has run through England, and in fact, through the whole civilised world.

I, who so immensely admired you, cannot believe that you have been told the truth about these Indian monkeys. I believe that you, one of the world's greatest Pacifists, would almost declare war on the U.S.A. if you knew what these Americans do to India's monkeys

Let me copy from a Dutch newspaper.

'If you, in England, have influence with the Prime Minister of India, please use that influence and implore Mr Nehru to stop this outrage. These Indian monkeys are used to test jackets for space-travel They are strapped in air-tight jackets and placed in air-tight rooms Then all air is pumped out of these jackets and out of the room as well How long can these monkeys survive without air? After some seconds, their eyes bulge and jump out of their sockets as they struggle for breath. On their lips, foam thickered with blood, appears. Although strapped, their bodies and faces convulse in the final death-struggle. Fiendish demons in Men's clothes watch them, stop-watch in their hands, 15—20 seconds. Their little hearts still beat and then they render spirit'

When these monkeys have reached an altitude of 80 or 100 miles, it appears that poison gas finishes them off, if they should be alive still.

When I translated these lines into English, sleep would not come to me for almost a week, Mr. Nehru! I walked about, lay down again and walked about again I visited a London laboratory and saw little Indian monkeys huddled together, waiting for merciful death to come. And the American vivisector beats the London vivisector in diabolical cruelty.

[श्री मोहन स्वरूप]

We, in England, are perplexed that you, Mr. Nehru, can bring such sorrow upon us. How could you do it, Mr Nehru!

Please, Mr. Nehru, do think again! and to reverse your decision once more!".

यह एक बहुत लम्बा लेटर है लेकिन मैंने थोडा सा पढ कर सुनाया है । इस लेटर के पढने से मेरी बहुत कुछ मुश्किल हल हो गई । मेरे पास बहुत सी तस्वीरें वहा की सोसाइटीज ने भेजी है जिन्हे मै पेश कर सकता हू । बीसो लेटर्स है जिनमे मुर्दा बन्दरो की तस्वीरे दी गई है और पता चलता है किस तरह से उन्हे मारा जाता है । बहुत सी फोटिग्स भी मेरे पास मौजूद है जिनमे दिल्ली के वाकयात बताये गये है । लाल किले पर बहुत से बन्दर मरे हुये पाये गये । श्रीमती अरुन्डेल ने भी, जोकि राज्य सभा की मेम्बर है, उन को देखा था । बहुत से दूसरे लोगो ने भी उस देखा, वहा पर हजारो बन्दर पडे हुय थे । कहा जाता है कि उनमे से बहुत से बन्दर थे जो कि मादा थे और उन मे से बहुतो के गर्भ था । बहुत से बन्दर उन मे से बीमार थे और जो एक्सपोर्टर्स है उन्होने उन बन्दरो को लाल किले के पास फेक दिया । मरे हुय बन्दरो की लाशें वहा सडती रही । इस तरह के बहुत से कोटेशन्स मेरे पास मौजूद है जिन मे कहा गया है कि चूकि बन्दरो को मरा हुआ पाया गया इसलिये उन्हे छोड दिया गया ।

एक माननीय सदस्य क्यो उनको मारा गया ?

श्री मोहन स्वरूप इसलिये मार डाला गया क वे बीमार थे । जैसे ही हवाई जहाज में भेजे गये, वैसे ही उनको मारना शुरू कर दिया गया और लाशे फेक दी गईं । इस तरह के बन्दरो का स्लाटर हो रहा है । चूकि बन्दरो के साथ इस तरह से हो रहा है इसलिये मैं नही समझता कि इसको हमें जारी रखना चाहिये ।

एक माननीय सदस्य : क्या करेंगे बन्दरो का ?

श्री मोहन स्वरूप . जहा तक बन्दरो का सवाल है, हमारे यहा बहुत सी ऐसी चीजे हैं जो कि खेती को नुकसान पहुंचाती हैं और बहुत बड़ी न्युसेंस हैं, खाली बन्दर ही ऐसे नही है । बहुत से दूसरे जानवर है । मुझे बताया गया कि जो अफ्रीकन बन्दर है वह ऐसा नही है जिसे अच्छा माना जाता हो । हिन्दुस्तान के बन्दर ज्यादा अच्छे माने जाते हैं । इसलिये मै सदन से प्रार्थना करता हू कि वह इसको सोचे । बहुत सी ऐसी चीजे है जो कि मेरे कहने के लिये हैं लेकिन इस लेटर ने मेरी बहुत बडी मुश्किल हल कर दी है । उसके जरिये जो कुछ मै कहना चाहता था उस मे से बहुत कुछ मै पेश कर सका हू ।

मै हाउस से निवेदन करना चाहता हू कि इस चीज को रोका जाय । यह तिजारत बन्द की जाय यह हमारे लिये शोभनीय नही है । देश के लोग इस को बहुत शर्म से देखते है और इस पर किसी को कोई श्रद्धा नही है । यह ठीक है कि बाहर के देशो से जो इस तरह की तिजारत की जा रही है, उससे हमे थोडा फारेन एक्सचेन्ज मिलता है लेकिन इसके अलावा बहुत सी दूसरी चीज है जिनसे हमको फारेन एक्सचेन्ज मिलता है । १० या २० करोड रुपया इससे न मिला तो कौन बडा भारी नुकसान हो जायेगा । मैं आपके द्वारा, सभापति महोदय, गवर्नमेंट से और हाउस से प्रार्थना करता हू कि इस क्रुएल्टी को मैसेकर को, रोका जाय, इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय । मुझे बताया गया कि शायद ढाई पौंड तक के बन्दर का एक्सपोर्ट बन्द कर दिया गया है, लेकिन ढाई पौंड का बन्दर तो एक छोटा सा बच्चा हुआ करता है । मैं चाहता हूं कि इसको पूरी तरह से रोका जाय और बन्दरों का एक्सपोर्ट बिल्कुल बन्द कर दिया जाय ।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात खत्म करता हूं ।

Mr. Chairman. Resolution moved

"This House is of opinion that the export of monkeys be banned"

17 35 hrs

STATEMENT *RE* SHOOTING DOWN OF I A F AIRCRAFT IN PAKISTAN

The Minister of Defence (Shri Krishna Menon) Government deeply regret to report to the House the loss of one Indian Air Force Canberra aircraft on the morning of the 10th April 1959

In view of the circumstances in which this event occurred and in view of the various reports that have appeared in the press and the concern of the House itself, Government would like to place all the available facts before the House

In the normal flying programme of the day, one Canberra aircraft equipped for survey photography and not for bombing or hostile purposes took off from an I A F airfield on the morning of the 10th April at 6 A M It however, failed to return within the expected time

The mission of this aircraft was to take aerial photographs for the Survey of India of the territory of the Union in the areas of Himachal Pradesh, Punjab and Jammu and Kashmir The lost aircraft was scheduled to complete its task within a period of four or five hours and should therefore have returned to its base not later than 11 O'Clock on the morning of the 10th of April

The aircraft, however, failed to return and was awaited until midday Thereafter, the Air Force authorities, in accordance with the usual practice, ordered a search in the area which was to be surveyed by the missing plane

News reached Air Headquarters, and I believe the public generally, after mid-day that Pakistan Radio had announced that "an unidentified' aircraft had been intercepted by Sabre Jet Fighters of the Pakistan Air Force and had been shot down Similar reports, later in the day, stated that the aircrew of the plane that had been shot down had been picked up and taken to Rawalpindi

Later some time in the evening of the 10th similar reports, and the papers printed in the evening, mentioned the incident and that an IAF Canberra was the aircraft shot down About this time, a Press Trust of India report also stated that two Indian Air Force men who were the crew of the shot-down aircraft, mentioned by them also as an IAF Canberra were taken to Rawalpindi The House should be informed that no communication had reached either the Government through diplomatic channels or Air Headquarters through Pakistan Air Force channels at the time of the incident or later in the day at any time

This morning Air Headquarters as is customary in such contexts, communicated with Pakistan Air Headquarters, and were informed that the lost aircraft was a Canberra of the Indian Air Force They were also informed that the pilot and the navigator who were the sole crew of the aircraft had been injured and were in Rawalpindi Air Headquarters were also informed by the Pakistan Air authorities that these two men would be returned to India They are now on their way home in a Pakistan Air Force freighter aircraft Government regret to say that both the airmen have been injured but fortunately not grievously The House should be informed that this type of Canberra carries no arms or weapons From the fact that the aeroplane was shot down in